यह विश्व के जाने-माने, किन्तु भारतवासी प्रोफेसर प्रदीप शर्मा की विशाल प्रयोगशाला है। जिसकी सुरक्षा के लिये थल सेना हमेशा सज्जग रहती है। भारत सरकार को अपने उच्चकोटी के वैज्ञानिक प्रदीप शर्मा पर नाज है, क्योंकि प्रोफेसर शर्मा अपने बहुत से अद्भुत एवं आश्चर्यजनक अविष्कारों से सम्पूर्ण विश्व के सामने भारत का मस्तक ऊंचा कर चुके हैं।

आजकल भी प्रोफेसर शर्मा एक महत्वपूर्ण प्रयोग में दिन-रात कार्य कर रहे थे। भारत सरकार को विश्वास था कि जिस दिन यह प्रयोग पूरा हो जायेगा, उस दिन सम्पूर्ण विश्व एक बार फिर दांतों तले उंगली दबा लेगा।
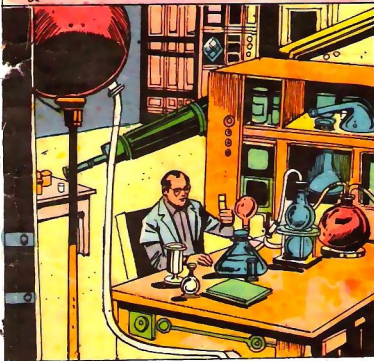
वैसे तो भारत सरकार ने प्रोफेसर के उस आविष्कार को गुप्त रखने की भरसक चेष्टा की थी, लेकिन फिर भी न जाने कैसे भारत की उन्नती से ईर्ष्या रखने वाले कुछ देशों को उस प्रयोग की भनक लग गई, और वे उसे उड़ाने की फिराक में लग गये। उन देशों में एक जैमेरिका भी था। जैमेरिका सीक्रेट सर्विस के हैडक्वार्टर में एक दिन—

बार भारत जाना ट्रिपल थ्री, और वहां फार्मूला उड़ा कर लाना होगा।
क्या मतलब ?
मतलब यह कि भारत के एक महान् वैज्ञानिक प्रोफेसर प्रदीप शर्मा आजकल एक ऐसी किरणों की ईजाद करने में जुटे हुए हैं, जिससे पलक झपकते ही बड़ी-से-बड़ी पहाड़ी को राख के ढेर में बदला जा सकता है। धरती में गहरे से गहरा गड्ढा किया जा सकता है...
...बड़े से बड़े एवं विशाल से विशाल सागर को पलक झपकने से पहले ही उन किरणों द्वारा सुखाया और बंजर भूमि को खेती लायक बनाया जा सकता है।
असम्भव! मैं ऐसे आविष्कार पर विश्वास नहीं कर सकता। इस प्रकार की किरणों की ईजाद कोरी कल्पना है और इसके विषय में सोचना कोरी मूर्खता है।
बौखलाओ मत एजेन्ट टोरा, ताजा रिपोर्ट के अनुसार हिन्दुस्तान का वह आला दिमाग प्रोफेसर शर्मा सचमुच इस कोरी कल्पना को सार्थक करने जा रहा है। वह उन किरणों का आविष्कार लगभग पूरा भी कर चुका है।
ओ माई गॉड, तब तो यह विश्व के लिये सबसे बड़ी उपलब्धि और विश्व का दसवां आश्चर्य होगा।

बिल्कुल ठीक, इसीलिये हमारी सरकार चाहती है कि इससे पहले कि प्रोफेसर शर्मा अपना आविष्कार पूरा करके उसका फार्मूला अपनी सरकार को सौंपें, वह फार्मूला हमारे देश पहुंच जाये।
अब इस बात का तुम स्वयं ही अंदाजा लगा सकते हो कि उस अद्भुत एवं चमत्कारिक किरणों के फार्मूले के हमारे देश के हाथ लगने पर हमारे देश की सामाजिक और आर्थिक स्थिति कितनी सुदृढ़ हो सकती है।
मैं अपने देश की उन्नति और अच्छाई के लिये कुछ भी करने के लिये तैयार हूं चीफ! आप आदेश करें, मुझे भारत कब रवाना होना है।
प्लेन की टिक... आवश्यक कागजात इस लिफाफे में हैं। लो, इसे सम्भाल कर रख लो।
ओ. के. चीफ, अब मुझे आज्ञा दीजिये।
जाओ, मुझे विश्वास है कि हमेशा की तरह इस बार भी तुम अपने मिशन में सफल होकर लौटोगे...
... और हां, प्रोफेसर शर्मा और उनकी प्रयोगशाला की विस्तृत जानकारी आज रात ही तुम तक तुम्हारे फ्लैट में पहुंच जायेगी। उसका अध्ययन भी कर लेना। विश यू गुड लक।
धन्यवाद चीफ, अब मैं जाकर सफर की तैयारी करता हूं।

क यात्री वाहक विमान
यरपोर्ट से भारत के लिये
स विमान में जैमेरिका का
एजेन्ट टोरा उर्फ ट्रिपल श्री
र था।
इधर भारत में प्रोफेसर शर्मा अपने आविष्कार का आन्तिम परिक्षण कर रहे थे।
यदि यह चट्टान मेरी आविष्कारित किरणों से राख बन गयी तो समझूंगा मेरा आविष्कार सफल रहा।
प्रोफेसर शर्मा ने मशीन में लगे एक बटन को जैसे ही दबाया, बिजली जैसी कौंध के साथ ही मशीन के आगे लगी नली से नीले रंग की किरणें निकल-कर सामने स्टूल पर रखी चट्टान से टकराईं और—
वाह! एक्सीलेण्ट!
कुछ क्षणों तक आग की लपटों में घिरे रहने के बाद वह चट्टान राख के एक छोटे से ढेर में बदल गयी।
वैरीगुड! मेरा प्रयोग पूरी तरह सफल रहा। बस अब इन एक्स किरणों को भारी तादाद में तैयार करना है। उसके बाद ये किरणें ऊंचे-से-ऊंचे व बड़े-से-बड़े पहाड़ को भी राख के ढेर में बदलने में सक्षम होंगी।
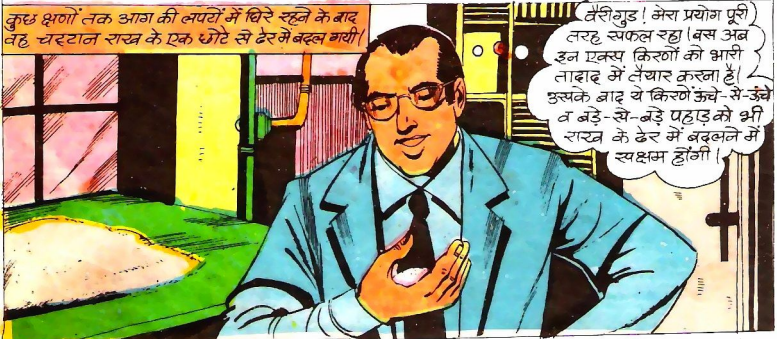
तभी —
सर, कोई डॉ. शम्भु दयाल आपसे मिलना चाहते हैं।
डॉ. शम्भु दयाल?
सहसा उनकी आंखों के सामने एक परिचित चेहरा घूम गया।
ओह! तुम चलो, मैं अभी आता हूं।
राईट सर
आगन्तुक प्रोफेसर शर्मा का विश्वसनीय सेक्रेट्री तथा सहायक था, लेकिन उसे भी प्रोफेसर ने अपने प्रयोग की हवा नहीं लगने दी थी

सहायक के जाने के बाद —
डॉ. शम्भु तो पांच वर्ष से जर्मनी में थे, फिर आज अचानक...!
डॉ. शम्भु प्रो. शर्मा के घनिष्ठ मित्रों में से एक थे। लेकिन जब से डॉ. शम्भु जर्मनी गये थे, तब से आज तक उनकी मुलाकात नहीं हुई थी। इस बीच पांच साल का लम्बा अरसा बीत चुका था।

प्रयोगशाला के ही एक हिस्से में प्रोफेसर शर्मा का निवास स्थान था, जहां वे अपनी इकलौती बेटी लता के साथ रहते थे। घर का सारा काम-काज नौकर-चाकर ही करते थे, क्योंकि प्रोफेसर की पत्नी का देहान्त हुए दस साल बीत चुके थे। अपनी प्रयोगशाला से निकल कर प्रोफेसर सीधे अपने ड्राइंग रूम में पहुंचे।
हैलो प्रोफेसर!
हैलो डाक्टर!

बैठो भाई, वैसे मुझे तुम्हारे अचानक आगमन पर आश्चर्य है? तुम तो जर्मनी गए हुए थे ना?
हां, लेकिन आ जैमेरिका से रहा हूं।

मतलब यह कि मैं जर्मनी में दो साल रहने के बाद अमेरिका चला गया था। कल ही यहां आया हूं, लेकिन जल्द ही वापस लौटना है, इसलिये सोचा क्यों न आज ही तुमसे मुलाकात कर लूं।
यह तुमने ठीक किया, लेकिन आजकल तुम कर क्या रहे हो?
अरे भाई, करना क्या है? बस वही एक पुराना रोग है। पेड़-पौधों और जड़ी-बूटियों पर अनुसन्धान करना। सो आज भी वही कर रहा हूं...
...लगता है सारी जिंदगी इसी रोग में गुजर जायेगी। हा-हा-हा-!
हा-हा-हा- वास्तव में शम्भु, तुम इन पांच सालों में भी जरा नहीं बदले।
लेकिन प्रदीप, तुम काफी बदल गये हो, यानी इतनी देर मुझे आये हुए हो गयी, लेकिन तुमने सिवाय बातों के अभी तक कुछ पिलाना तो दूर, पूछा भी नहीं।
ओह! मैं तो भूल ही गया था। बोलो क्या पियोगे, गर्म या ठंडा?

प्रो. शर्मा ने जानबूझ कर अपने प्रयोग की बात छुपाई थी।

अपनी चोरी पकड़े जाते देख प्रोफेसर शर्मा से तुरन्त ही कुछ कहते नहीं बन पड़ा।

कुछ औपचारिक बातें करने के पश्चात्—

और प्रोफेसर को असमंजस में छोड़ डॉ. शम्भु दयाल कमरे से बाहर निकल गये।

...विवार को राम-रहीम पिकनिक मनाने के लिये समुद्र के
राम भइया, मान लो इस समय समुद्र से किसी की लाश निकल आये तो यहां मौजूद लोगों की क्या हालत हो?
तुम हर समय मनहूसियत वाली बातें मत किया करो। आजकल हमारे शहर में जो शान्ति बनी हुई है, उसे बनी ही रहने दो।

लेकिन भइया, मुझे तो इस शान्ति के पीछे एक भयानक तूफान छिपा महसूस हो रहा है। न जाने कई दिनों से क्यों मेरे दिल में यह विचार बार-बार आ रहा है कि जल्द ही हमारे शहर में कोई भयानक घटना घटने वाली है, जिसकी शुरुआत इसी समुद्र से होगी।
हुं, तो तुम इसीलिये जिद करके आज मुझे यहां तफरीह कराने लाये हो।

ओह नो, ऐसी कोई बात नहीं है राम भइया! बहुत दिन हो गये थे समुद्र की लहरों को देखे, इसीलिये मैंने आज यहां पिकनिक का प्रोग्राम बनाया था। क्या तुम्हें यहां का वातावरण अच्छा नहीं लग रहा?

लग रहा था, लेकिन तुम्हारी बातों से सारा मूड ऑफ हो गया। चलो, अब घर वापस चलो। काफी बोर हो लिया मैं तुम्हारे साथ।
अरे-अरे, यह अचानक क्या हुआ तुम्हें? क्या मुझसे नाराज हो गये तुम।

राम बिना कोई उत्तर दिये एक तरफ खड़ी अपनी मोटर साइकिल की ओर बढ़ गया।
अरे-अरे भइया, रुको तो सही! मैं भी आ रहा हूं!

तभी —
बचाओ...
अरे बाप रे!
हे भगवान्!

आ...ई...ई... बचाओ!

अगले ही पल वहां एकदम आतंक सा छा गया।
उफ! बेचारी
बचाओ!
???
???

प्राण खतरे ...सकी मदद ...ा चाहिये, चलो!
लेकिन भइया, हम उस विशालकाय ह्वेल से किस प्रकार मुकाबला करेंगे। वह हमें भी निगल जायेगी।
लेकिन राम ने रहीम की बात पर कोई ध्यान नहीं दिया और...

...पूरी शक्ति से वह समुद्र की ओर दौड़ पड़ा।
रुक जाओ भइया! जान-बूझ कर मौत के मुंह में छलांग लगाने की मूर्खता मत करो।
बको मत बुजदिल!
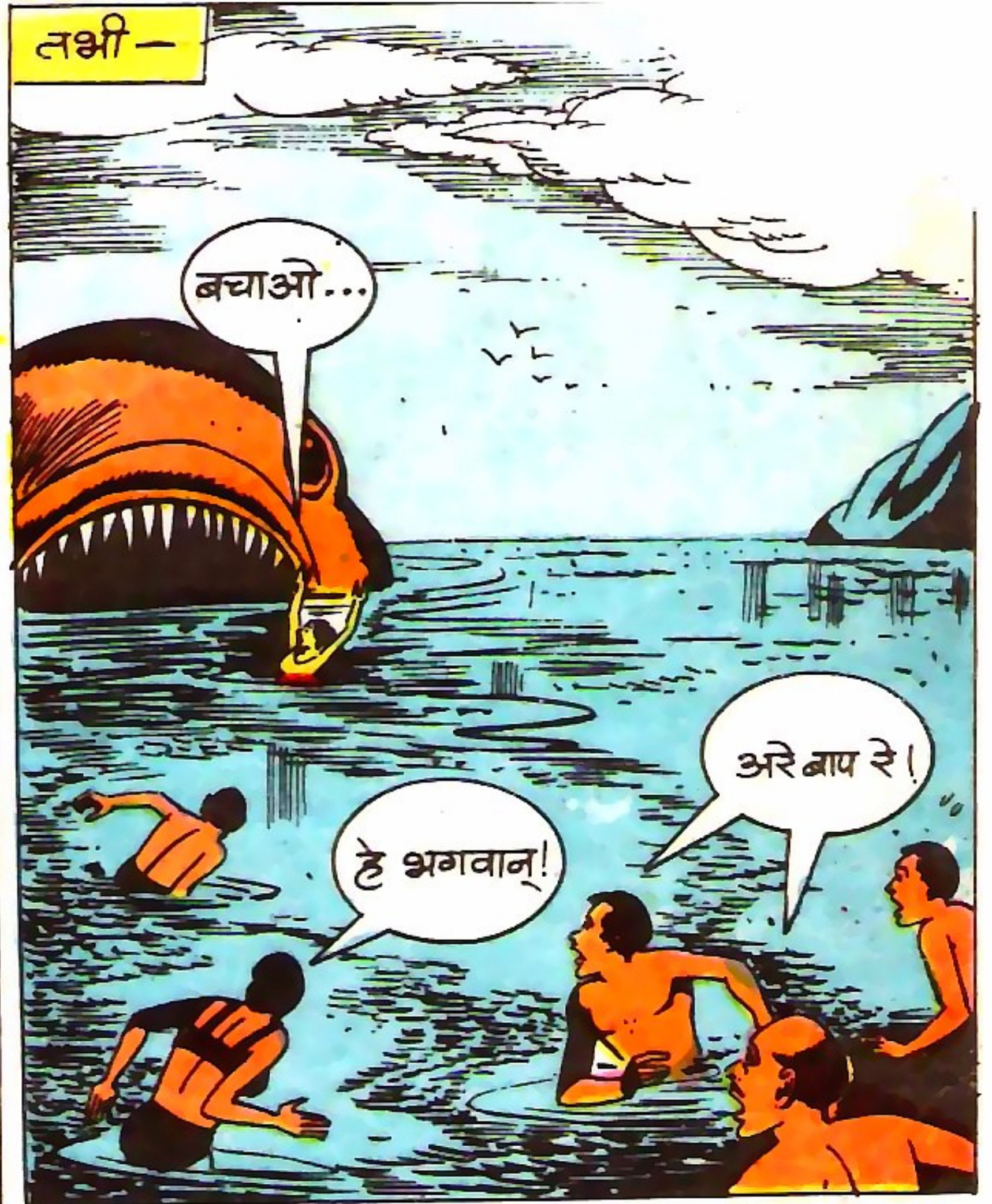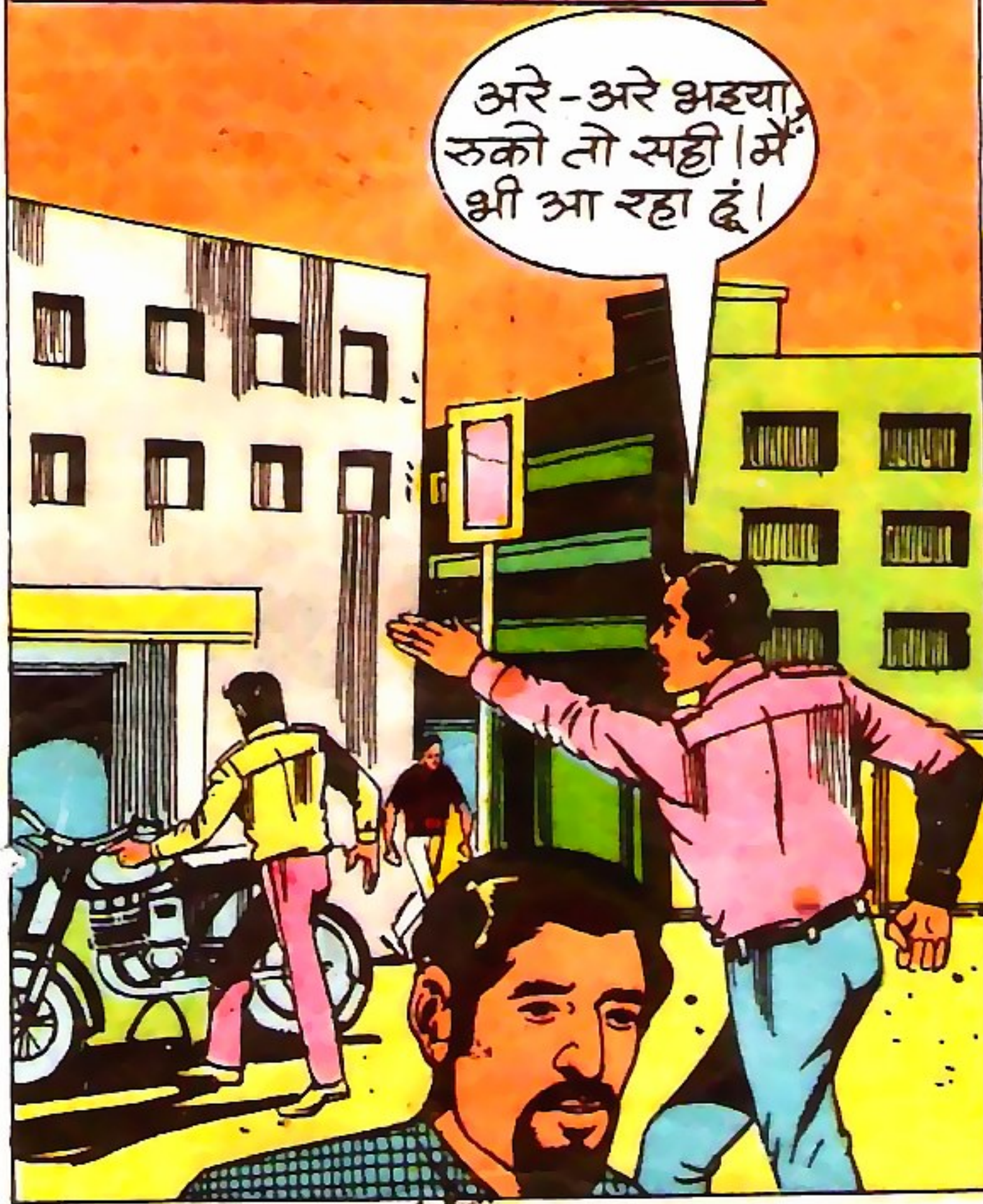
राम ने दौड़ते हुए ही समुद्र में छलांग लगाई और पूरी तेजी से तैरता हुआ उस स्त्री की ओर बढ़ने लगा, जो मौत और जिन्दगी के बीच झूलती हुई किनारे पर पहुंचने की चेष्टा कर रही थी, जबकि ह्वेल उसे निगलने के लिये बिल्कुल उसके निकट आ पहुंची थी।
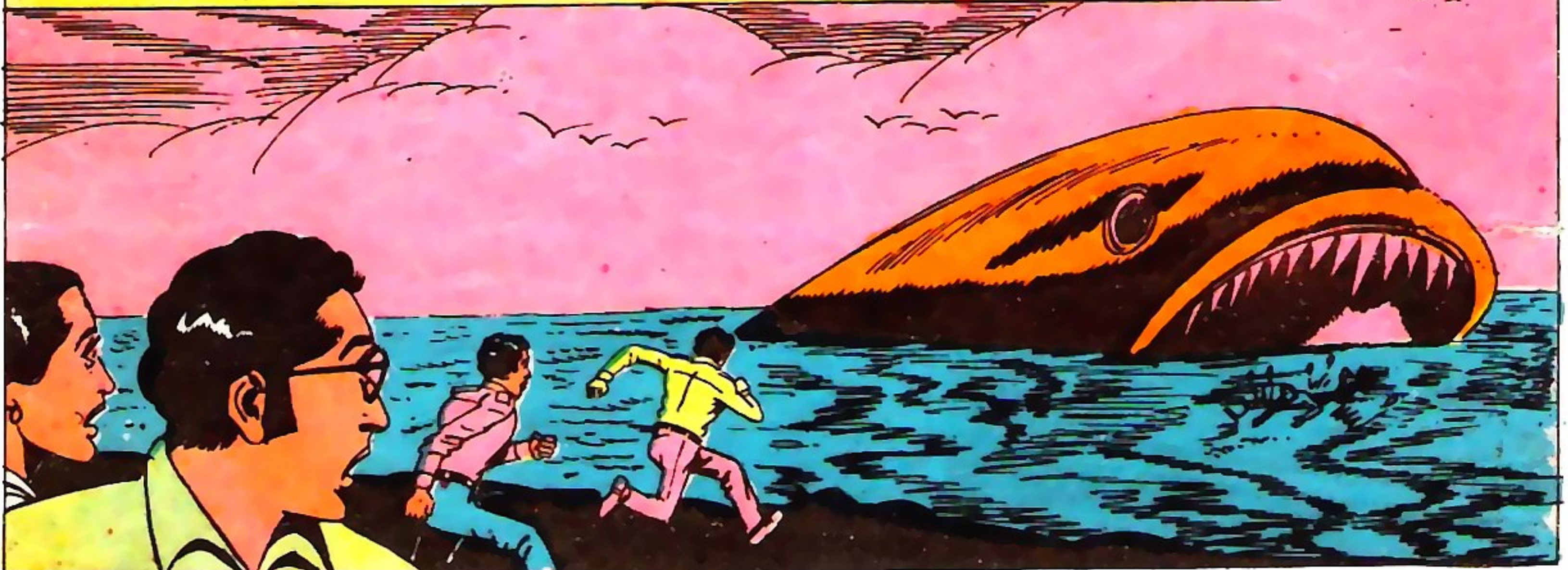
राम के पीछे-पीछे रहीम ने भी पानी में छलांग लगाई। लेकिन इससे पहले कि दोनों में से कोई भी उस युवती की मदद के लिये उसके निकट पहुंच पाता—
आ...ई...ई...
ओह!
उफ!
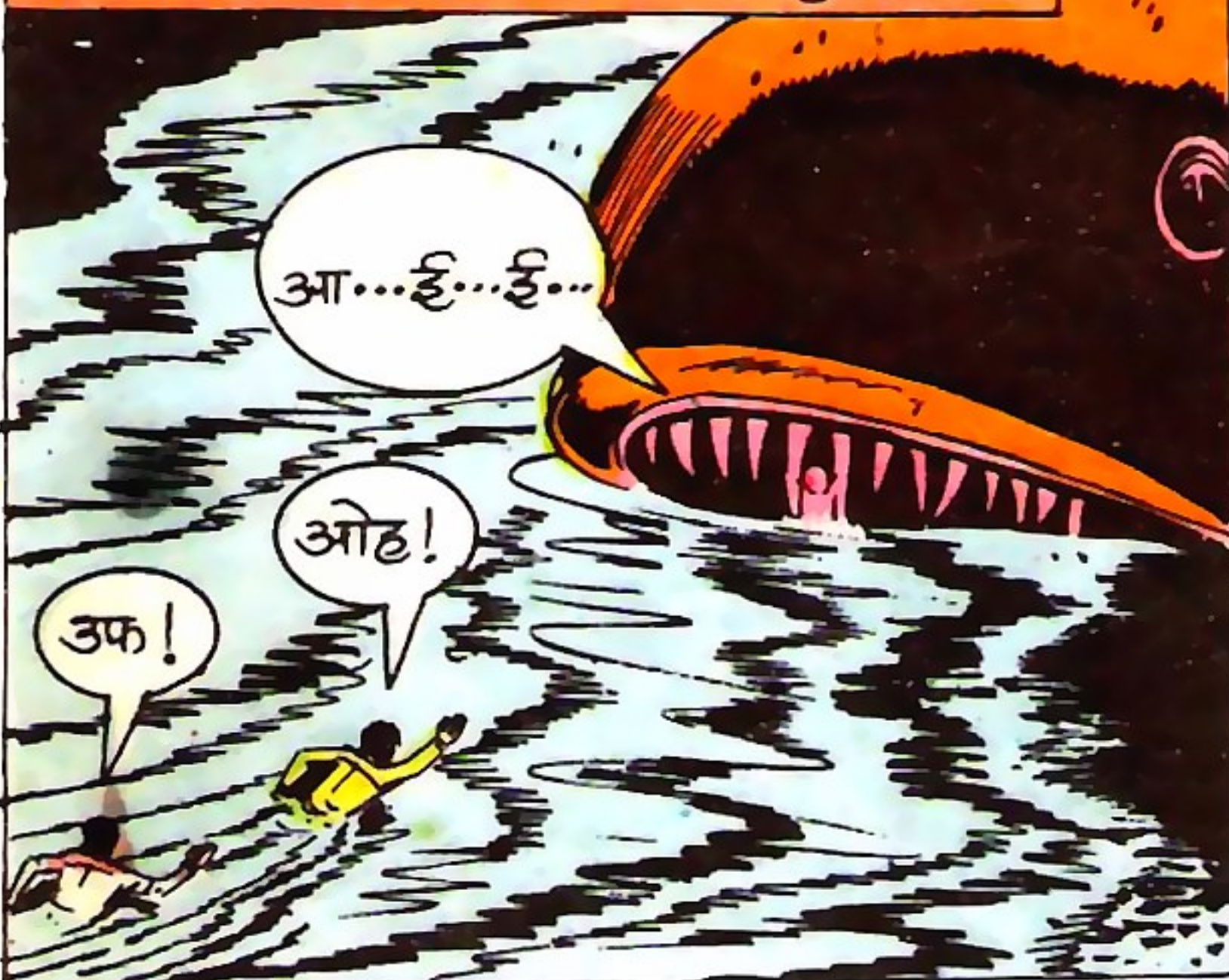
ह्वेल उस युवती को निगलकर पानी में डुबकी लगा गयी।
अफसोस है कि हम उसे नहीं बचा सके। चलो, पुलिस को फोन करके सारी स्थिति से अवगत करा दें।
ठीक है, चलो!

घटना की सूचना मिलते ही पुलिस कुछ विशिष्ट गोता खोरों के साथ वहां पहुंच गयी।
आप लोग उस ह्वेल को तलाश कर उसे खत्म करने की कोशिश करें, ताकि पुनः ऐसी घटना की पुनावृति न होने पाये।
बहुत अच्छा आफिसर!
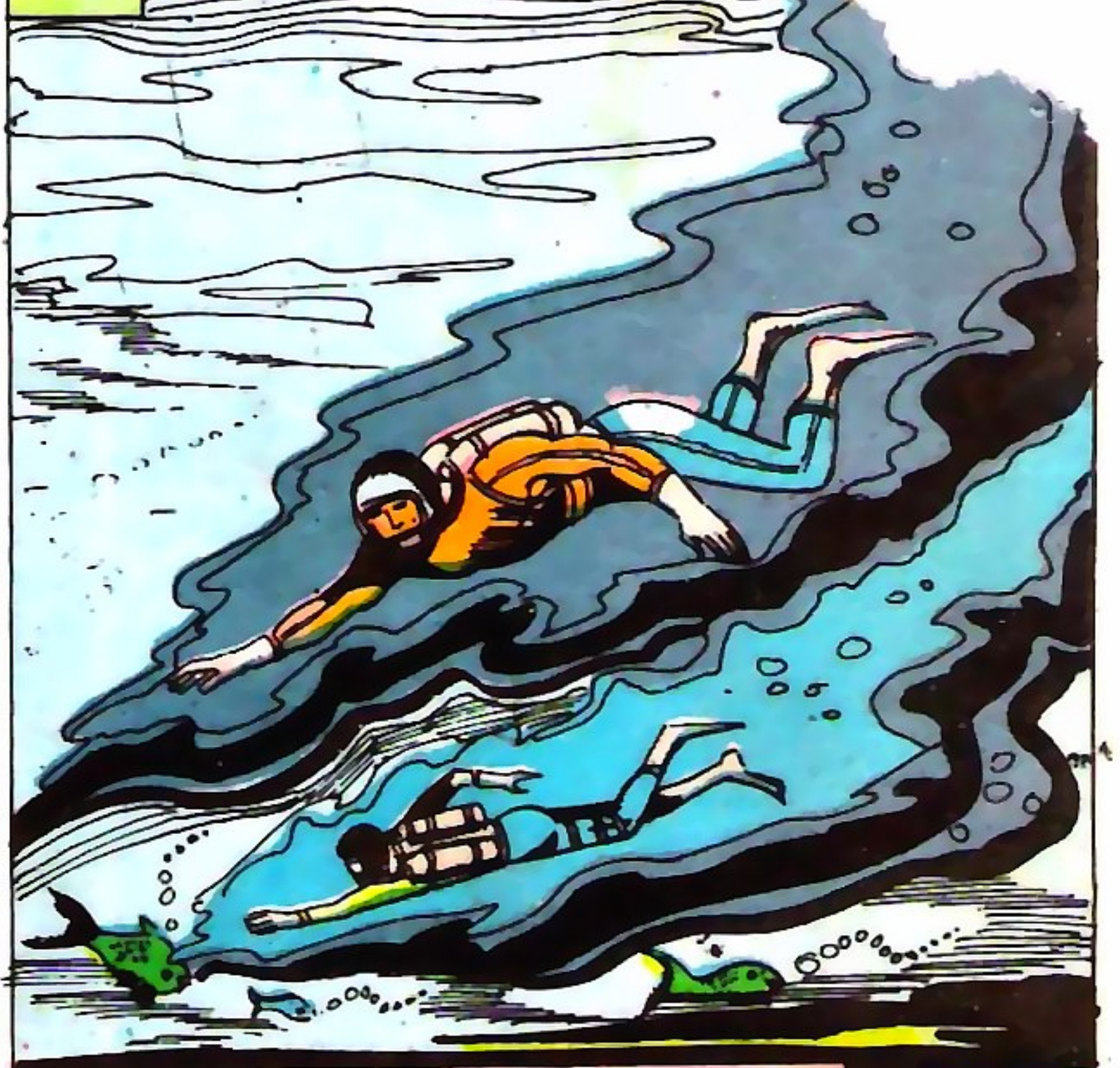
तैराकों ने उस ह्वेल को तलाश करने की...
...परन्तु उन्हें वह ह्वेल पानी के भीतर और बाहर दूर-दूर तक कहीं दिखाई नहीं दी।

हताश पुलिस दस्ते व गोता खोर तैराकों के साथ-साथ राम-रहीम भी वापस लौट पड़े।
देखा रहीम, कभी-कभी मुंह से निकली बात कितनी सच हो जाती है।
हां भइया, देख लिया। अब तो मुझे भी विश्वास होने लगा है कि जल्द ही हमारे शहर पर कोई नई एवं भयानक मुसीबत आने वाली है।
ओह!

अगले दिन के तमाम समाचार-पत्र इसी घटना से भरे पड़े थे।
रहीम, क्या तुम जानना चाहोगे कि वह युवती कौन थी, जिसे ह्वेल खा गयी है?
हां, कौन थी वह बेचारी?
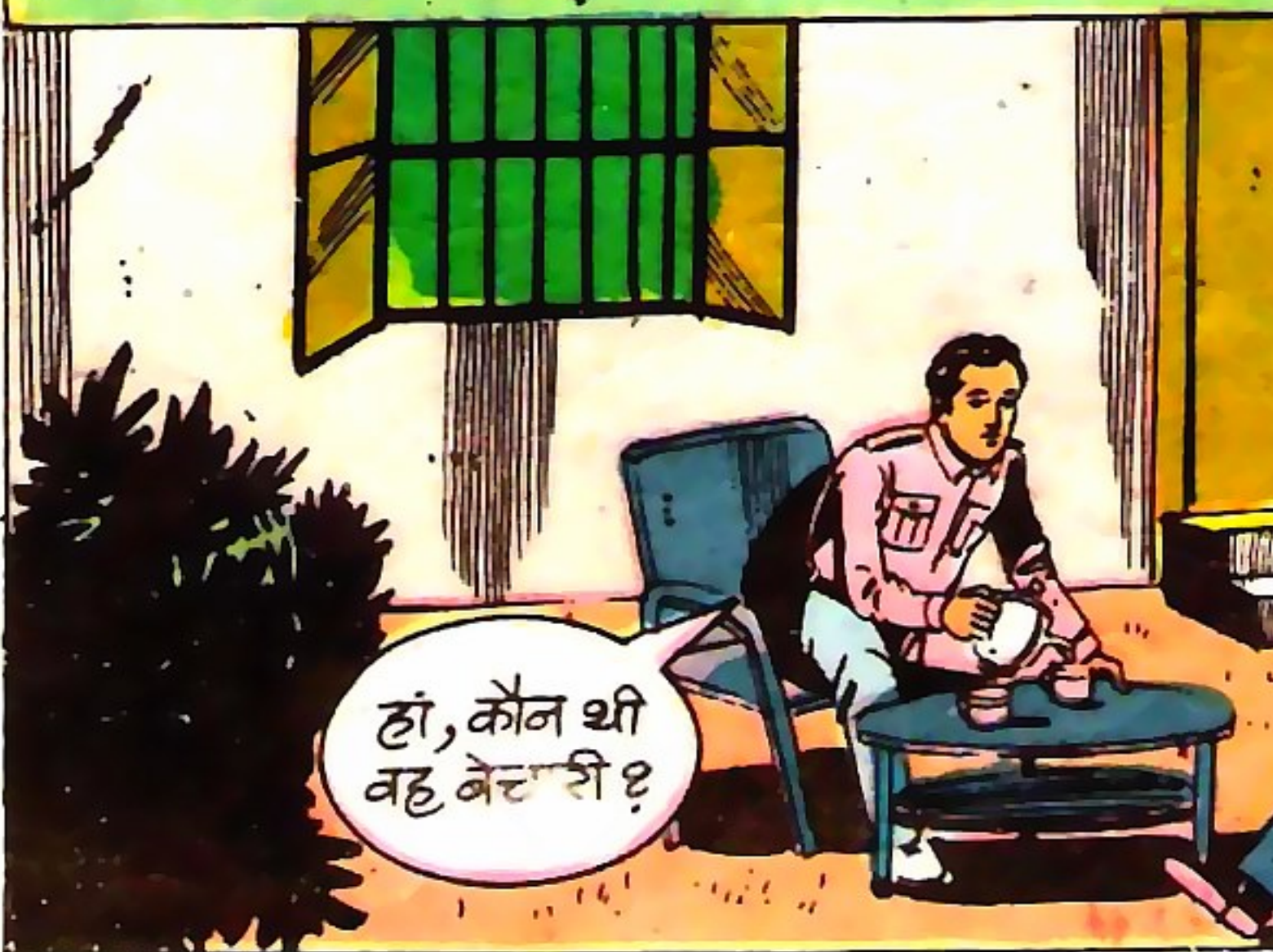
देश के महान प्रोफेसर प्रदीप की इकलौती बेटी लता शर्मा!
क्या-?

लेकिन इससे पहले कि रहीम कोई प्रश्न करता, शामू काका वहां आकर बोले—
राम बेटा, तुम्हारा फोन है!
ओह! रहीम, तुम यहीं बैठो! मैं फोन सुन कर अभी आता हूं!
ठीक है!

हैलो, राम स्पीकिंग!
मैं चीफ मुखर्जी बोल रहा हूं राम बेटे! तुम रहीम के साथ तुरन्त हैड क्वार्टर पहुंचो!

खैरियत तो है ना चीफ अंकल! यह अचानक बुलाने का कारण?
मैं फोन पर कुछ नहीं बताना चाहता! यहां पहुंचो, फिर बताऊंगा!
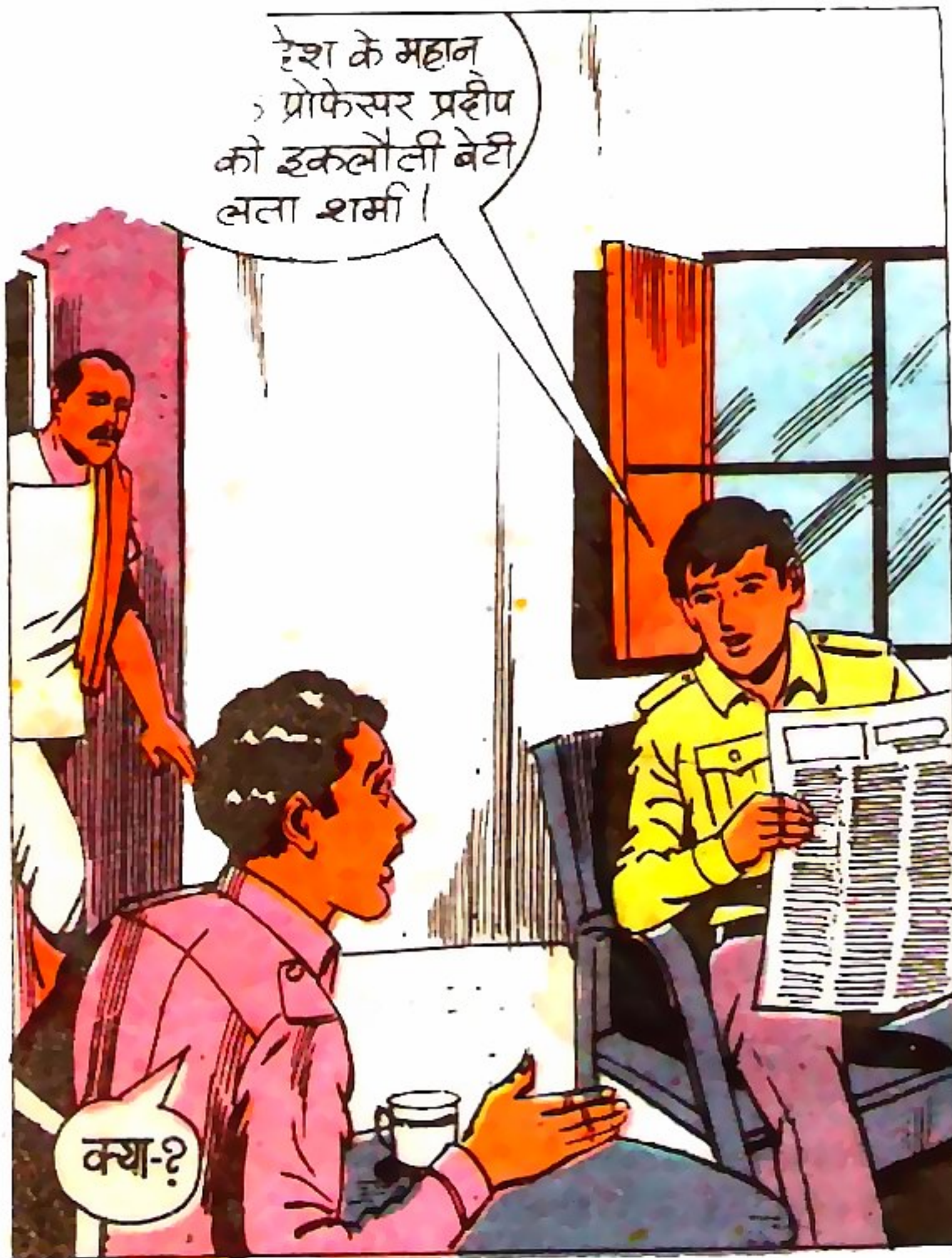
चीफ की ओर से सम्बन्ध विच्छेद होते ही राम ने रिसीवर क्रेडिल पर रखा! और रहीम के पास पहुंच गया।
किसका फोन था भइया ?
चीफ का। फटाफट तैयार हो जाओ। उन्होंने हमें इसी समय बुलाया है।

कुछ ही देर बाद दोनों मोटर साइकिल पर
की ओर उड़े चले जा रहे थे।
लगता है, फिर कोई नया केस हैडक्वार्टर में हमारा इंतजार कर रहा है, वरना चीफ अकारण ही हमें बुलाने वाले नहीं हैं।
वह तो ठीक है रहीम, मुझे तुम्हारी बात पर अब पूरी तरह सोचना पड़ेगा। कहीं वास्तव में ही तो हमारे शहर पर कोई भयानक मुसीबत नहीं आने वाली ?
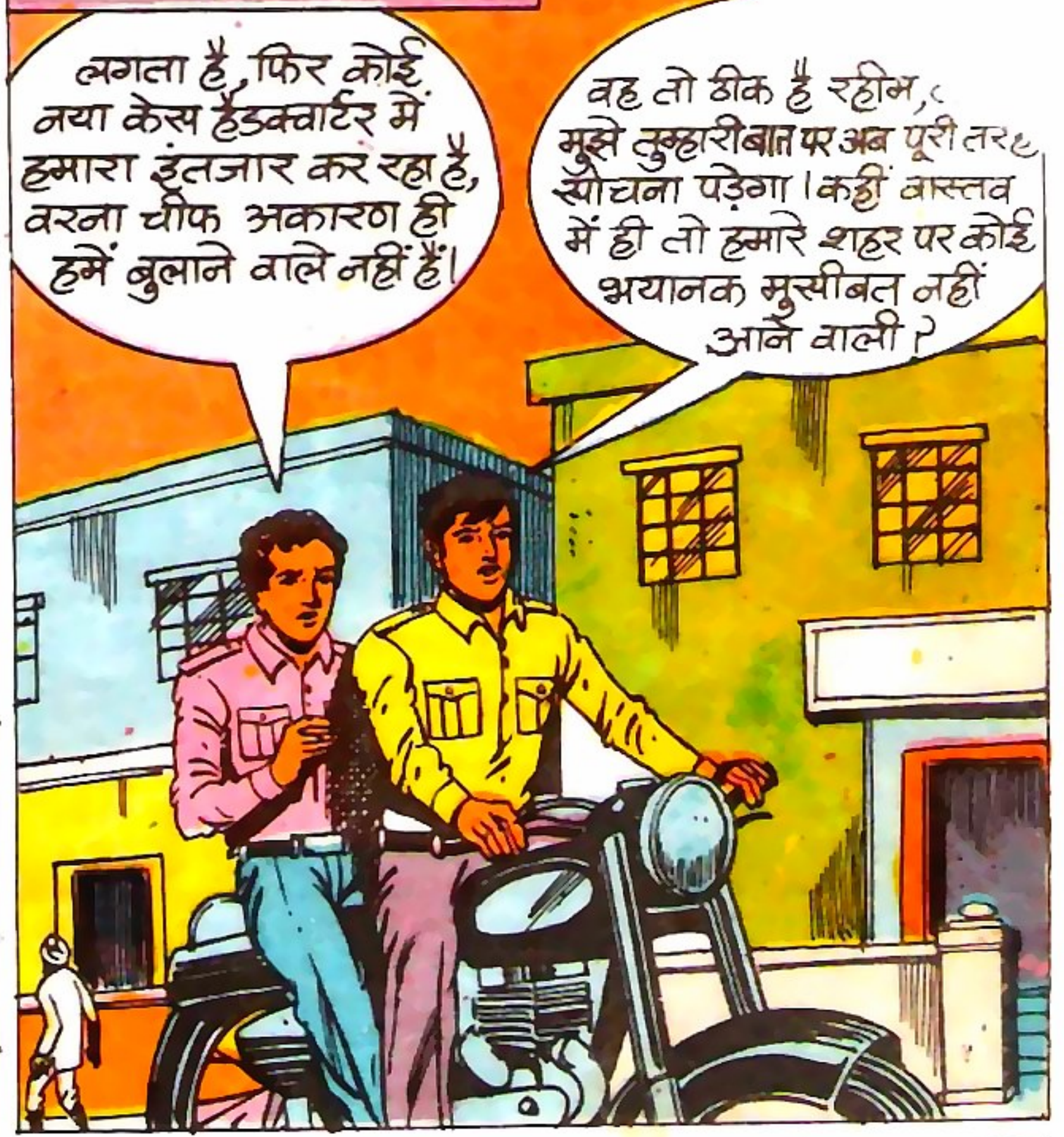
लगभग बीस मिनट के बाद वे बाल सीक्रेट सर्विस के हैडक्वार्टर में चीफ मुखर्जी के सामने थे।
गुड मार्निंग चीफ!
गुड मार्निंग, बैठो।

अब बताइये चीफ! आपने यह अकस्मात् हमें कैसे बुलाया ?
तुमने आज का अखबार तो पढ़ा होगा, जिसमें ह्वेल द्वारा एक लड़की को निगल जाने की खबर छपी है।

समाचार केवल पढ़ा ही इस हादसे को भी स्वयं खों से देखा है। अफसोस हमें इस बाल का है चीफ कि हम मिस लता शर्मा की कोई मदद नहीं कर सके।
फिर राम ने उन्हें गत दिवस की सारी घटना कह सुनाई।

सुनकर चीफ मुखर्जी का चेहरा अत्यन्त गम्भीर हो उठा।
क्या बात है चीफ? यह आप एकाएक गम्भीर क्यों हो गये?
बात ही कुछ ऐसी है बेटे, दरअसल उस ह्वेल द्वारा की गई यह पहली ही घटना नहीं है। वह अब तक कई देशों के जहाजों को भी समूचा निगल चुकी है।

यह आप क्या कह रहे हैं चीफ? भला एक ह्वेल समूचे जहाज को निगल जाये, यह कैसे सम्भव हो सकता है?
विश्वास करो राम। मैं जो भी कह रहा हूं, वह सत्य है। इन्टरपोल पुलिस की भी यही रिपोर्ट है और इस बात के कुछ प्रत्यक्षदर्शी गवाह भी हैं। हां, हमारे देश में लड़की को निगलने वाली यह प्रथम घटना है।

ओह! क्या आप यह बताने का कष्ट करेंगे कि इस ह्वेल ने अब तक किन-किन देशों के जहाजों को अपना शिकार बनाया है।
फ्रांस, जर्मनी, अमरीका, चीन और जापान। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि वह ह्वेल साधारण नहीं है। जरूर इसके पीछे कोई गहरा रहस्य छिपा हुआ है।

क्या आप को विश्वास है चीफ कि यह सभी काण्ड एक ही ह्वेल ने किये हैं?
हां, अब तक की रिपोर्ट तो यही कहती है वैसे भी राम बेटे, इतनी विशाल काय ह्वेल, जो किसी जहाज तक को समूचा निगल जाये...

...धरती के किसी भी समुद्र में अब तक नहीं देखी गयी है और न ही ऐसी किसी ह्वेल का किसी देश के पास कोई रिकार्ड ही है।
आश्चर्य है! यह हम पहली बार सुन रहे हैं कि कोई ह्वेल समुद्री जहाजों के पीछे पड़ी है। भला उसे जहाजों से क्या दुश्मनी हो सकती है।

मुझे तो अब इसमें किसी भयानक षड्यन्त्र की बू आने लगी है चीफ! कहीं ऐसा तो नहीं कि यह ह्वेल कोई समुद्री जीव न होकर कोई मशीनी ह्वेल नुमा जहाज हो और किसी विशेष प्रयोजन हेतु समुद्री जहाजों का अपहरण कर रहा हो।

ऐसा हो सकता है। यह विचार लगभग प्रत्येक देश की खुफिया पुलिस के दिमाग में उपज रहा है और इसी सम्भावना को मद्दे नजर रखते हुए पूरे विश्व की सरकारी मशीनरी अपनी-अपनी समुद्री सीमा में पूरे जोर-शोर के साथ उसकी खोजबीन करने में जुटी हुई है।

...क बात ...इये। क्या आजकल ...फेसर प्रदीप शर्मा किसी महत्वपूर्ण प्रयोग में जुटे हैं?
हां, लेकिन तुम्हारा यह प्रश्न करने का मतलब?
मतलब बहुत बड़ा है चीफ, लेकिन पहले आप यह बताइये कि आजकल वे किस किस्म का प्रयोग कर रहे हैं?
नहीं, इस सम्बन्ध में मैं तुम्हें कुछ नहीं बता सकता, क्योंकि इस सम्बन्ध में होम मिनिस्टर का सख्त आदेश है कि किसी को कुछ न बताया जाये, क्योंकि यह हमारे देश का टॉप सीक्रेट है।
ठीक है चीफ! फिर इस सम्बन्ध में हम प्रोफेसर अंकल से ही बात कर लेंगे, क्योंकि वे डैडी के अच्छे परिचितों में से हैं। आप यह बताइये कि आपने हमें यहां किस लिये बुलाया है?
मैंने जिस काम के लिये तुम्हें बुलाया था, उसे तुम स्वयं ही करने जा रहे हो। बेटे, प्रोफेसर शर्मा ने मुझे फोन किया था कि वे तुरन्त तुम दोनों से मिलना चाहते हैं।
ओह, तब तो हमें आज्ञा दीजिये चीफ! हम इसी समय जाकर उनसे मिल लेते हैं।
लेकिन राम, तुमने यह तो बताया ही नहीं कि तुम यह क्यों जानना चाहते थे कि प्रोफेसर आजकल क्या प्रयोग कर रहे हैं। उनके प्रयोग से इस केस का क्या सम्बन्ध है?

इस सम्बन्ध में मैं आपको प्रोफेसर अंकल से मिलने के बाद ही बता सकूंगा चीफ अंकल!

कहने के साथ ही राम, रहीम को साथ लेकर बाहर
अजीब जिद्दी लड़का है यह राम भी! किसी नतीजे पर पहुंचने के बावजूद भी उसने मुझे कुछ नहीं बताया।
अगले ही पल वे मोटर साइकिल पर सवार हो...

...प्रोफेसर शर्मा की कोठी की ओर उड़े चलेजा रहे थे।
क्या तुम किसी खास नतीजे पर पहुंच गये हो राम भइया!
शायद! वैसे रहीम, यह बात समझ लो कि तुम्हारे वे विचार अब जल्दी ही सत्य होने वाले हैं, जो तुमने समुद्र के किनारे जाहिर किये थे! हमारे देश पर जल्दी ही कोई भयानक खतरा आने वाला है।

कुछ देर बाद वे प्रोफेसर शर्मा की कोठी में प्रोफेसर शर्मा के सामने थे।
नमस्ते अंकल!
नमस्ते बेटा, आओ बैठो! मैं तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहा था।

...न है प्रो० आपकी बेटी...
राम, जो कुछ भी अखबारों में छपा है, वह हकीकत नहीं। लता को किसी ह्वेल ने नहीं निगला, बल्कि उसका अपहरण किया गया है...

...इसी कारण मैंने मि० मुखर्जी से कहकर तुम्हें विशेष रूप से यहां मिलने के लिये बुलाया है।
यह आप क्या कह रहे हैं प्रो० अंकल? हमने अपनी इन आंखों से उस ह्वेल द्वारा आपकी बेटी को निगलते देखा है, फिर...

तुम चुप रहो रहीम, अंकल को अपनी बात कहने दो!
हां अंकल, आप यह बात किस आधार पर कह रहे हैं कि आपकी बेटी लता वास्तव में किसी दुर्घटना की शिकार नहीं हुई, बल्कि उसका अपहरण किया गया है!

इस पत्र के आधार पर। यह मुझे कल शाम प्राप्त हुआ था। इसे पढ़ लो, फिर तुम्हारी समझ में सब कुछ आ जायेगा।
ओह!

राम ने पत्र लेकर पढ़ा। पत्र में लिखा था।
प्रोफेसर शर्मा,
यदि आप अपनी बेटी लता की जिन्दगी चाहते हैं तो कल रात 9-20 पर डायमंड हार्बर से जर्मनी रवाना होने वाले जहाज पर सवार हो जायें, लेकिन खबरदार, पुलिस से सम्पर्क करने अथवा इस पत्र का किसी को भी हवाला देने की कोशिश मत कीजियेगा, वरना परिणाम भयंकर होगा।
आपका हितैषी
ब्लैक ड्रैगन

इस पत्र से अब यह साफ हो जाता है कि कोई गैंग आपसे अपना कोई मकसद पूरा करना चाहता है।
बिल्कुल, और मुझे इस बात का भी पूरा विश्वास है कि गैंग का जो कोई भी बॉस है, वह एक सिरफिरा वैज्ञानिक है और वह व्हेल नुमा आधुनिक पनडुब्बी उसी की ईजाद है।

हुम्म... अब यह बताइये कि आप हमसे क्यों मिलना चाहते थे?
पुलिस अथवा सीक्रेट सर्विस से सम्पर्क करने से मेरी बेटी का जीवन खतरे में पड़ सकता था, इसी लिये इस सिलसिले में मैंने तुम दोनों की ही मदद लेना उचित समझा...

...सुनो बेटे, मुझे अपनी बेटी अपनी जान से भी ज्यादा प्यारी है, अतः मैंने निर्णय किया है कि मैं अपहरण कर्ताओं द्वारा निर्देशित जहाज पर सफर अवश्य करूंगा।
और आप चाहते हैं कि उस सफर में गुप्त रूप से हम भी आप के साथ रहें।
बिल्कुल ठीक समझे, मैं यही चाहता हूं।

ंकल, क्या आप
हैं कि आजकल
स महत्वपूर्ण प्रयोग
में लगे हुए हैं।
नहीं बेटे, यह टॉप सीक्रेट है, अतः मैं अपने प्रयोग के बारे में तुम्हें नहीं बता सकता।

प्रो॰ अंकल, मुझे सन्देह है कि कहीं अपराधी ने आपकी बेटी का अपहरण उसी प्रयोग को जानने के लिये न किया हो!
हां अंकल, उस स्थिति में आपके प्रयोग की महत्ता जानना हमारे लिये अति आवश्यक हो जाता है।

हो सकता है, लेकिन निश्चिंत रहो। यदि कारण यही रहा होगा, तो भी वे मुझसे उस प्रयोग के बारे में नहीं जान पायेंगे। चाहे वे लता के साथ-साथ मेरे भी प्राण क्यों न ले लें।
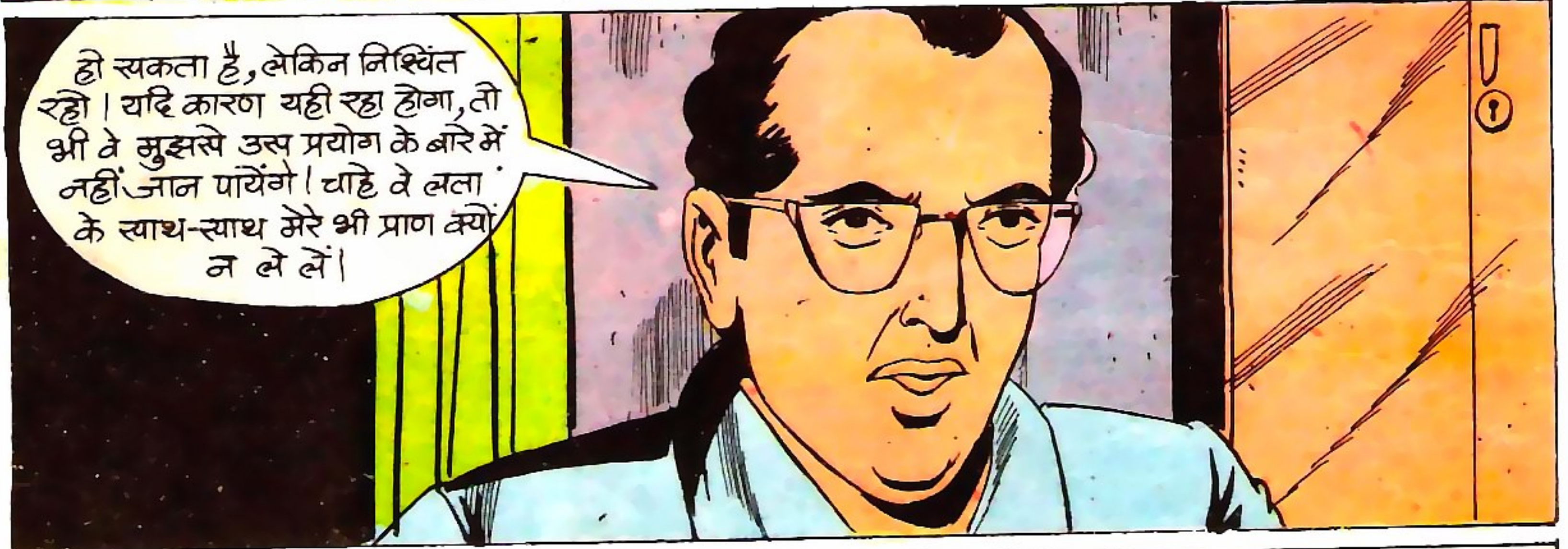
राम ने प्रयोग के बारे में जानने के लिये ज्यादा जिद नहीं की।
तो ठीक है, अब आप ध्यान से मेरी योजना सुनिये। आज रात जब आप 9-20 पर जाने वाले जहाज पर सवार होंगे...
फिर राम उन्हें अपनी योजना सुनाने लगा।

सब कुछ अच्छी तरह समझाने के पश्चात् राम-रहीम ने प्रो॰ से विदा ली और मोटर साइकिल पर सवार हो अपने घर की ओर लौट पड़े, लेकिन दोनों ही इस बात से सर्वथा अनभिज्ञ थे कि उनके प्रो॰ की कोठी से बाहर निकलते ही एक रहस्यमय व्यक्ति ट्रान्समीटर पर किसी से कॉन्टेक्ट करने लगा था।
हैलो... हैलो ब्लैक ड्रैगन, डॉन कॉलिंग-- हैलो-हैलो!
यस, ब्लैक ड्रैगन रिसीविंग, रिपोर्ट।

बॉस! अभी-अभी दो किशोर प्रोफेसर शर्मा से मिल कर गये हैं।
उन दोनों का हुलिया।
डॉन ने राम-रहीम का हुलिया बता दिया—
मूर्ख, वे जरूर राम-रहीम रहे होंगे। बाल सीक्रेट सर्विस के खतरनाक जासूस। क्या तुमने पता लगाने की कोशिश की कि प्रो॰ और उनके मध्य क्या बातचीत हुई।
कोशिश तो की थी बॉस, लेकिन सफल नहीं हो सका।
डॉन, तुम दिन-ब-दिन निकम्मे और लापरवाह होते जा रहे हो। खैर, अब मेरी बात ध्यान से सुनो...
फिर दूसरी ओर से कुछ कहा जाने लगा, जिसे डॉन ध्यान-पूर्वक सुनता रहा। जब आवाज़ आनी बंद हो गई तो उसने ट्रान्समीटर ऑफ किया और तेजी से एक तरफ चल पड़ा।
उसी रात डायमंड हार्बर से ठीक नौ बजकर बीस मिनट पर आकाश नामक एक यात्री वाहक जहाज जर्मनी के लिये रवाना हुआ, जिस पर प्रो॰ शर्मा भी अन्य यात्रियों के साथ सवार थे।
राम-रहीम पता नहीं इस जहाज पर सवार हुए भी हैं अथवा नहीं। खैर, मुझे अपने केबिन में पहुंचना चाहिये। राम ने मुझसे वहीं मिलने के लिये कहा था।
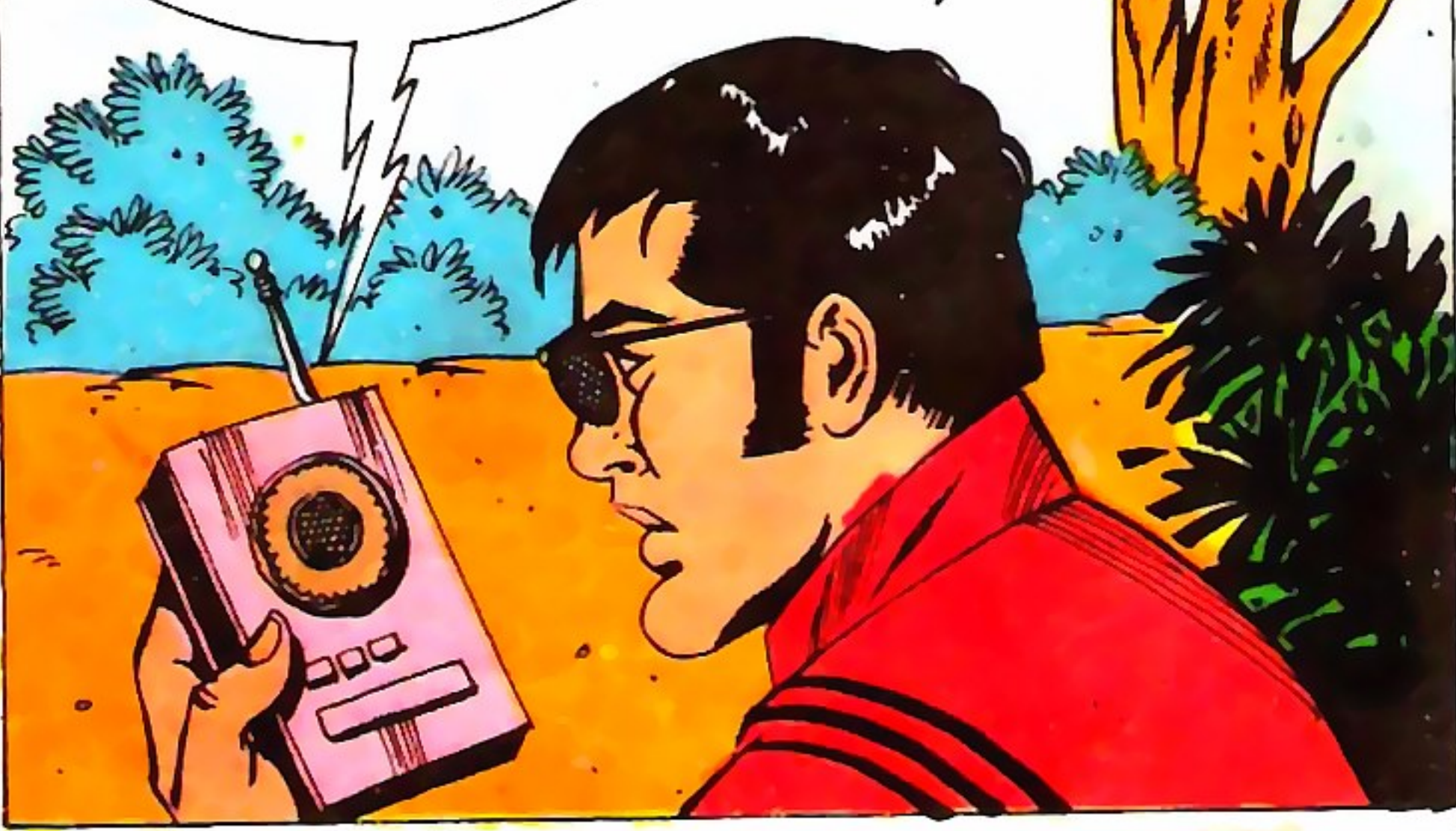
आश्चर्य है, प्रोफेसर के साथ राम-रहीम जहाज पर सवार नहीं हुए। मुझे बॉस को खबर करनी चाहिये।

इधर प्रोफेसर ने जैसे ही अपने कमरे का दरवाजा खोला—
कौन हो तुम लोग और मेरे केबिन में कैसे आये?
शांत हो जाइये अंकल, यह हम हैं।

अरे, तुम... राम-रहीम!
यस अंकल, और इस समय हम मेकअप में हैं।
समझता हूं। वास्तव में तुम दोनों बहुत होशियार हो?

अच्छा अंकल, यह बताइये कि क्या आपको जहाज पर कोई ऐसा सन्दिग्ध व्यक्ति नजर आया, जो आप की निगरानी कर रहा हो।
अभी तक तो नहीं, लेकिन यह बताओ कि मेरे केबिन के भीतर तुम लोग कैसे पहुंचे, जबकि मैं केबिन को लॉक करके गया था।

यह हमारे लिये कोई मुश्किल काम नहीं है अंकल! ऐसे कामों के लिये हम इस 'मास्टर-की' को हमेशा अपने साथ रखते हैं।
बहुत खूब!

सुनिये अंकल, जहाज पर जब यात्री सवार हो रहे थे तो हम पोर्ट पर खड़े एक-एक व्यक्ति को चेक कर रहे थे। उनमें हमें एक व्यक्ति सन्दिग्ध जान पड़ा है। वह ओवर कोट व हैट पहने हुए है और आप के केबिन से ठीक तीसरे केबिन में ठहरा हुआ है।

मुझे विश्वास है कि वह जल्द ही आपसे सम्पर्क जोड़ने की कोशिश करेगा, लेकिन आपको परेशान होने की कोई आवश्यकता नहीं है। हम आपके बगल वाले केबिन में ठहरे हुए हैं...

...यानी आपके और सन्दिग्ध व्यक्ति के बीच वाले केबिन में। यदि आवश्यकता पड़ी तो हम उसे ट्रेस करेंगे। बस, आपको उससे यह जानना है कि आखिर वे आपसे चाहते क्या हैं?
ठीक है, मैं समझ गया।

अब हम चलते हैं अंकल! आप सावधान रहना।
ओ.के.!

रहीम ने द्वार खोलकर बाहर झांका। बाहर में सन्नाटा देखकर वे चुपचाप प्रोफेसर के केबिन से बाहर निकल आये।
रहीम, तुम केबिन में पहुंचो, मैं जरा उस सन्दिग्ध व्यक्ति की गति-विधि एक बार फिर देख लूं।
ठीक है!
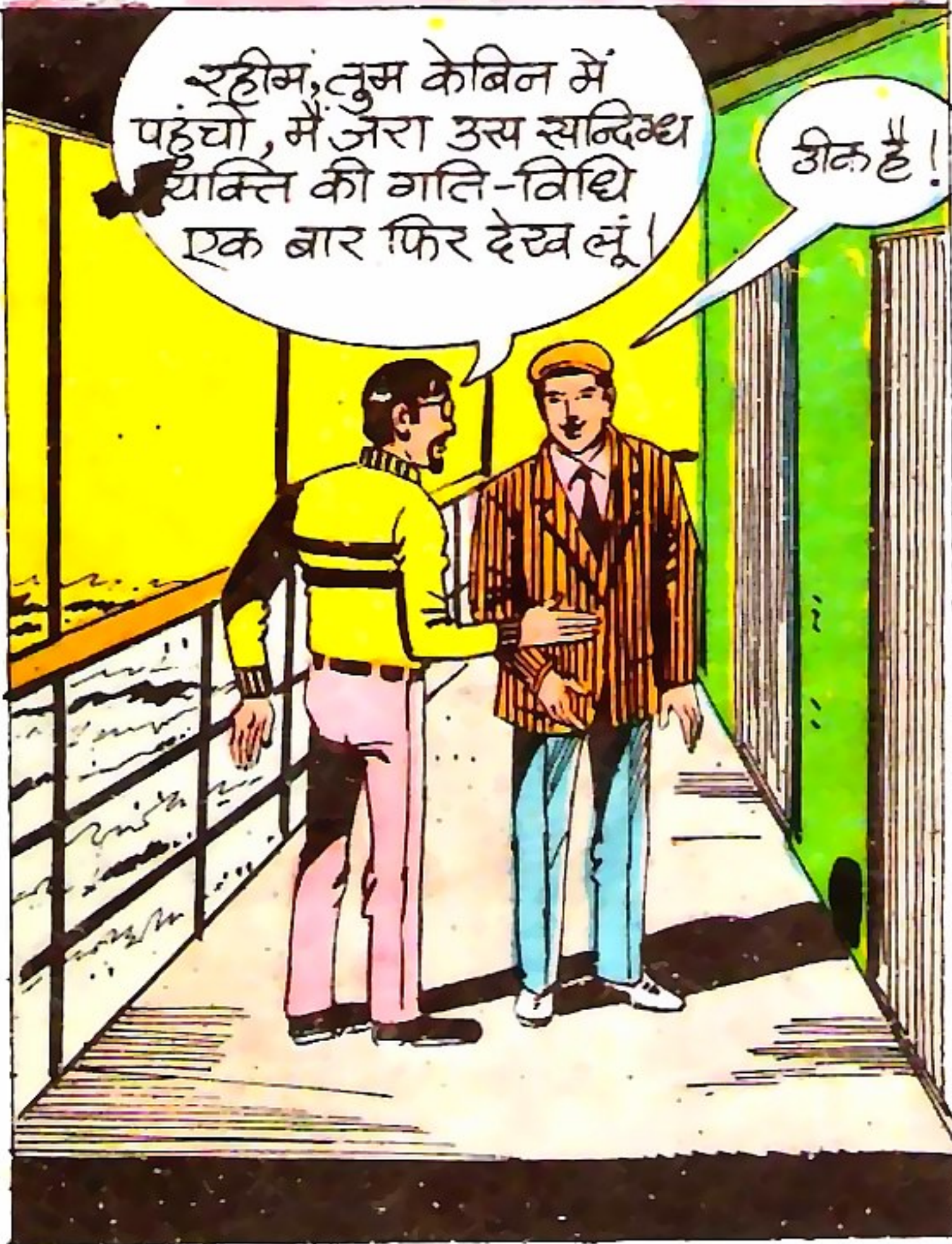
फिर रहीम तो अपने केबिन का लॉक खोलकर भीतर प्रविष्ट हो गया और राम तीसरे केबिन के की-होल से भीतर झांकने लगा, जो वास्तव में डॉन का ही कमरा था।

डॉन उस समय ट्रान्समीटर पर अपने बॉस से बात कर रहा था।
हां बॉस, मुझे पूरा विश्वास है कि राम-रहीम जहाज पर सवार नहीं हुए। लगता है वे किसी और वजह से प्रोफेसर से मिलने उनके घर पहुंचे थे।

चलो, यह भी अच्छा हुआ! तुम प्रोफेसर पर बराबर नजर रखो, हम जहाज को ठीक एक बजकर बीस मिनट पर मध्य सागर पर जैक करेंगे
ठीक है बॉस!
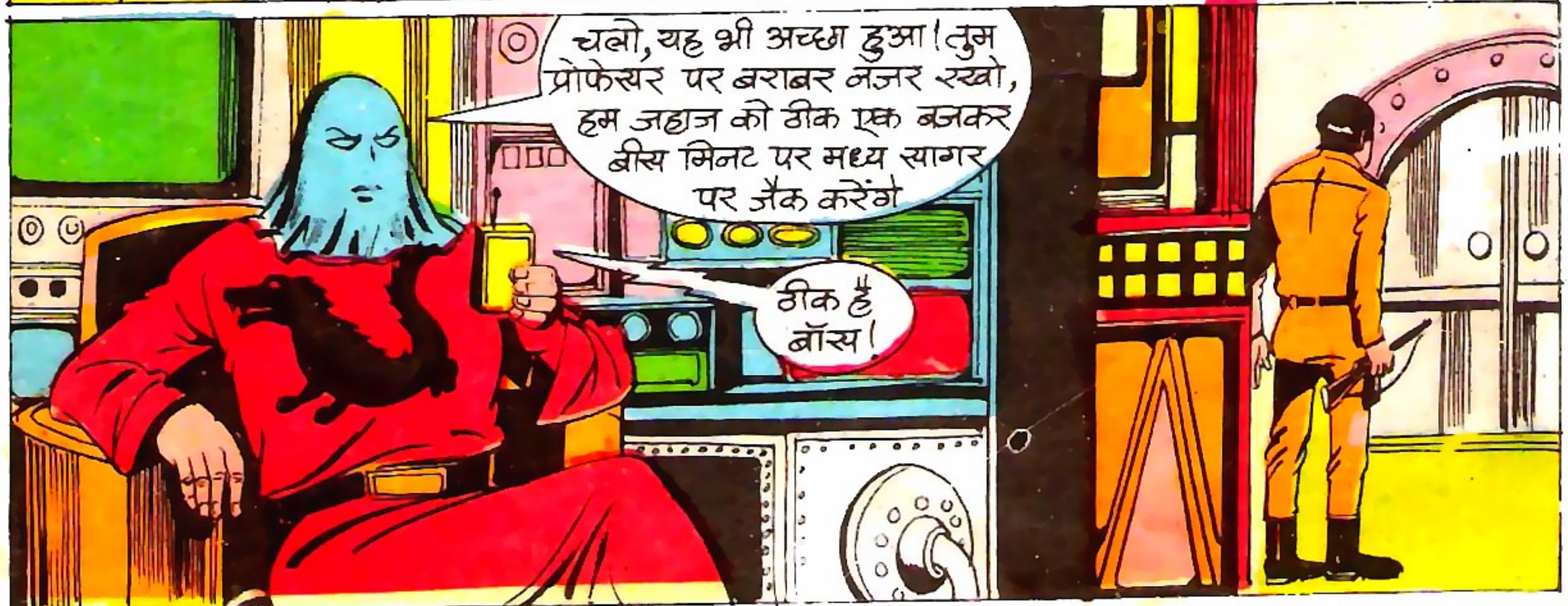
फिर जैसे ही डॉन ट्रान्समीटर ऑफ करके दरवाजे की ओर बढ़ा, राम दरवाजे से हट कर अपने केबिन की ओर बढ़ गया।

अगले ही पल राम अपने केबिन में
क्या हुआ ?
मेरा सन्देह ठ. निकला रहीम, वह व्यक्ति प्रोफेसर अंकल पर ही निगरानी रखे हुए है।
फिर राम ने जो कुछ डॉन के केबिन के भीतर देखा और सुना था वह सब कुछ रहीम को बता दिया।
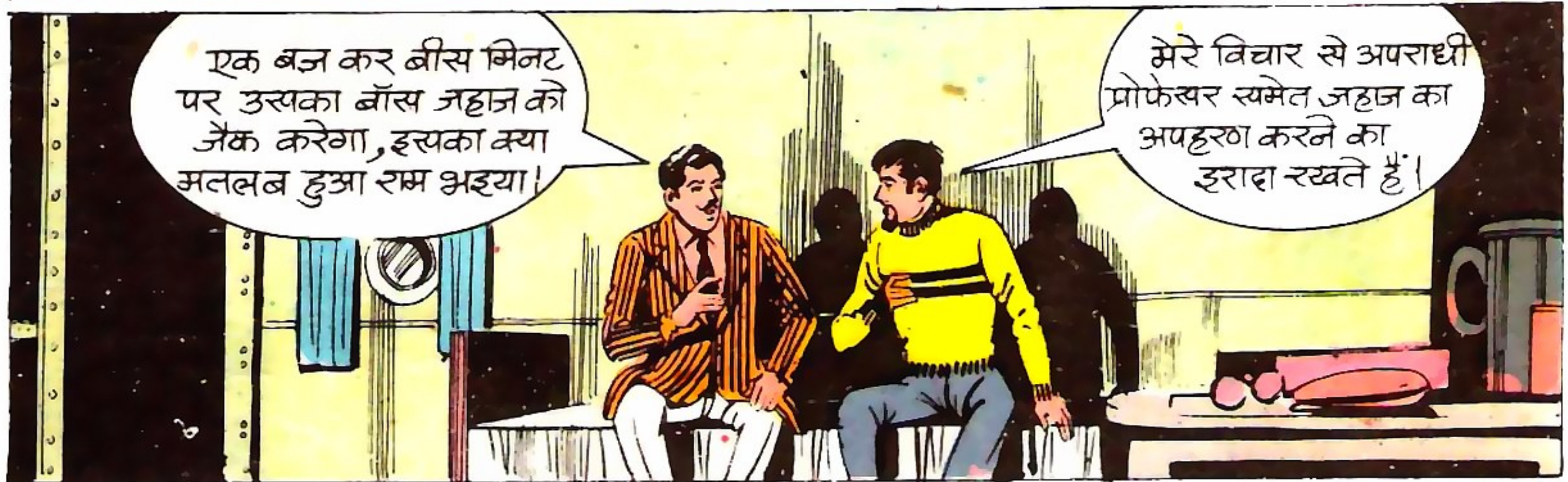
एक बज कर बीस मिनट पर उसका बॉस जहाज को जैक करेगा, इसका क्या मतलब हुआ राम भइया!
मेरे विचार से अपराधी प्रोफेसर समेत जहाज का अपहरण करने का इरादा रखते हैं।
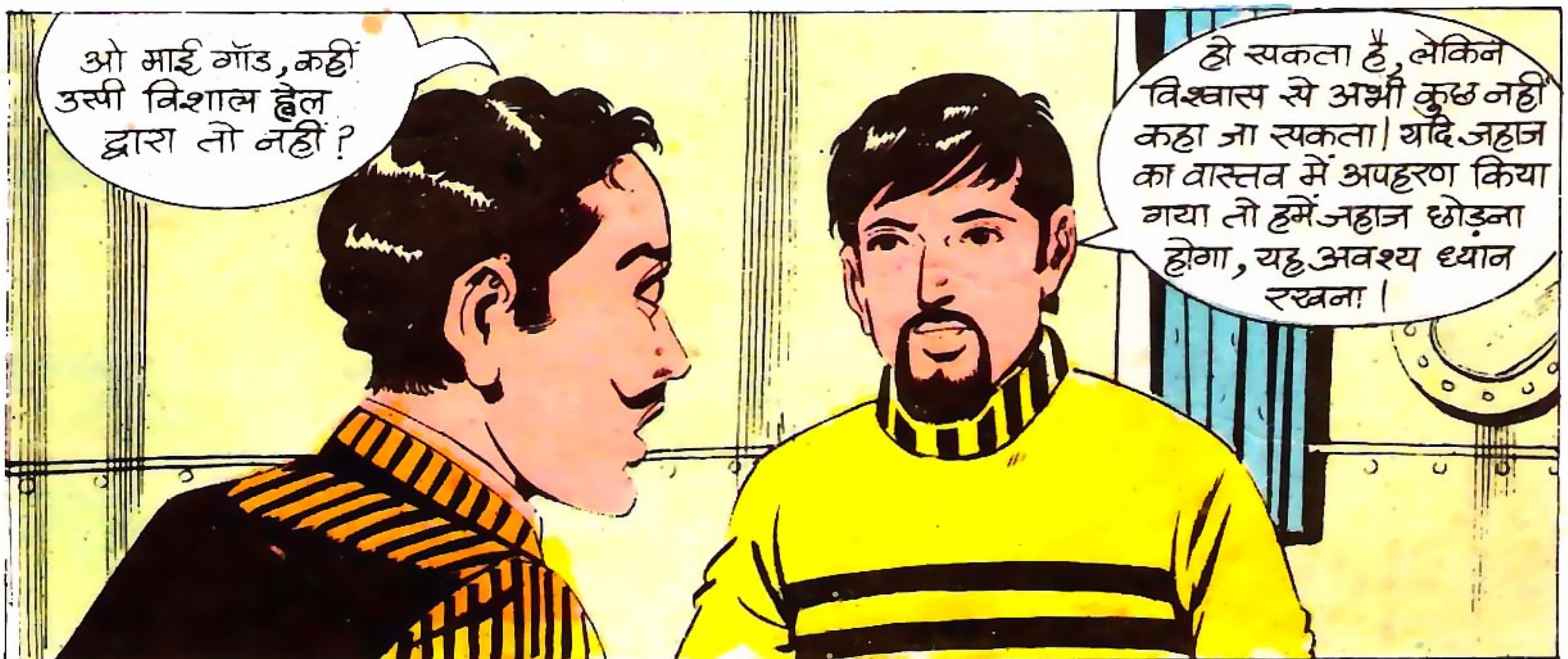
ओ माई गॉड, कहीं उसी विशाल ह्वेल द्वारा तो नहीं ?
हो सकता है, लेकिन विश्वास से अभी कुछ नहीं कहा जा सकता। यदि जहाज का वास्तव में अपहरण किया गया तो हमें जहाज छोड़ना होगा, यह अवश्य ध्यान रखना।
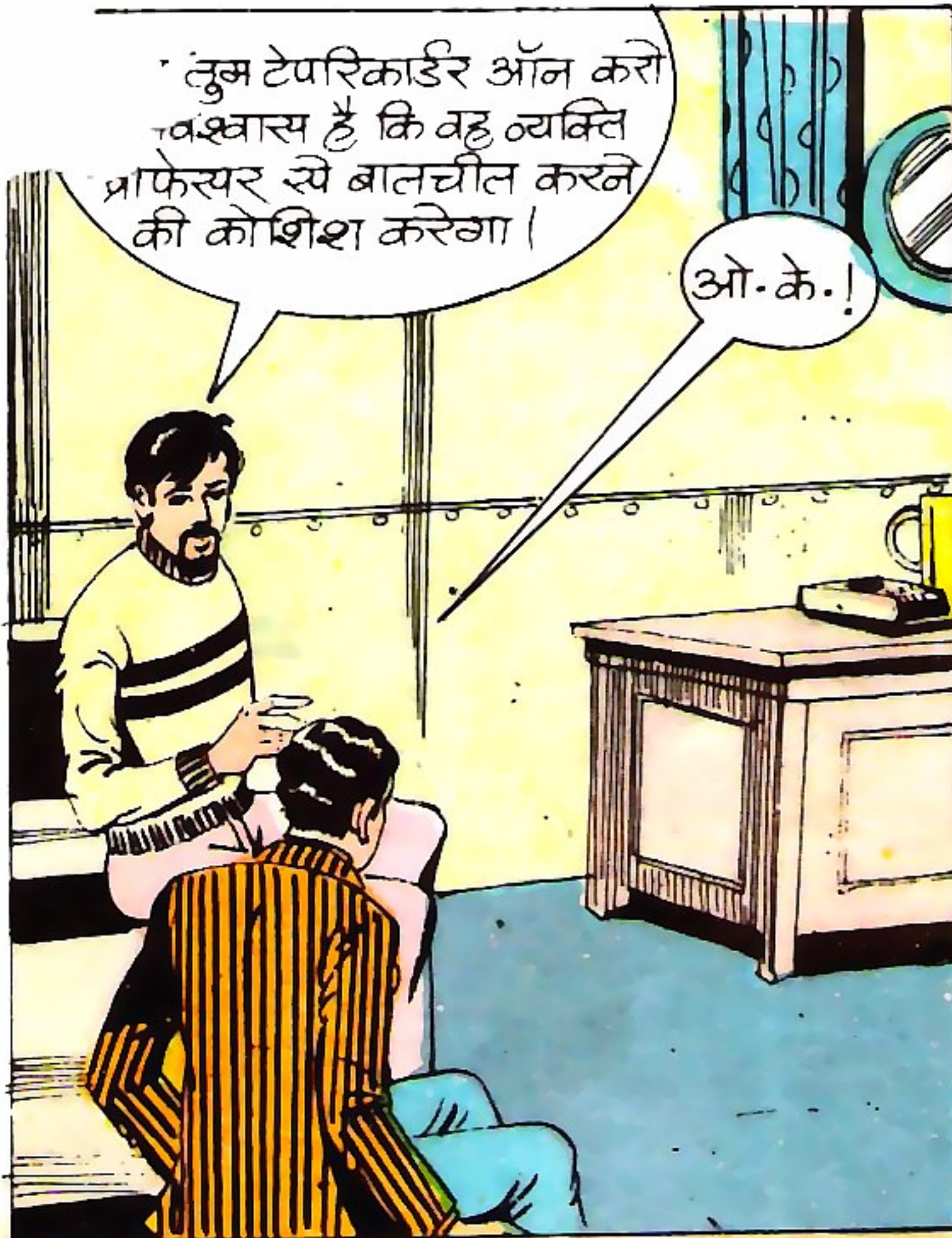
तुम टेपरिकार्डर ऑन करो
श्वास है कि वह व्यक्ति
फेसर से बातचीत करने
की कोशिश करेगा।
ओ॰के॰!
वास्तव में राम और रहीम प्रोफेसर के केबिन में एक डिक्टा फोन फिट कर आये थे, ताकि यदि प्रोफेसर के साथ कोई बात-चीत करे तो वे टेपरिकार्डर द्वारा उसे सुन सकें।

प्रोफेसर शर्मा ने एकाएक उत्तेजित हो डॉन का गिरेबान थाम लिया।
बताओ कहां है मेरी बेटी और तुमने उसका अपहरण क्यों किया? क्या चाहते हो तुम मुझसे?
शीघ्र ही तुम्हारे इन प्रश्नों का उत्तर भी मिल जायेगा प्रोफेसर! उत्तेजित होने की कोई जरूरत नहीं!

कहने के साथ ही डॉन ने एक झटके के साथ अपना गिरेबान छुड़ा लिया।
तुम लोगों ने मुझे विशेषकर इस जहाज पर सवार होने के लिये क्यों कहा?
इस जहाज पर हमारा कुछ विशेष सामान भी लोड है। तुम्हारे साथ-साथ वह सामान भी हमारे जीरो स्टेशन पर पहुंच जायेगा!

जीरो स्टेशन, कहां है यह?
वहीं जहां तुम्हारी बेटी मौजूद है। ज्यादा समझदार बनने की कोशिश मत करो प्रोफेसर! इतनी आसानी से तुम मुझसे हमारे मुख्य स्टेशन के बारे में नहीं उगलवा सकोगे। हा-हा-हा-।

और तुम भी ज्यादा समझदारी दिखाकर मुझे मूर्ख बनाने की कोशिश मत करो मिस्टर! भला चलते जहाज से तुम कैसे सबकी आंखों में धूल झोंक कर मुझे और अपने सामान को अपने अड्डे तक ले जाओगे।
तुम हमारी ह्वेल को भूल रहे हो प्रोफेसर। वह इस जहाज को तो क्या, इससे भी दुगने बड़े जहाज को आसानी से निगल सकती है?

तो इसका मतलब
दह ठीक निकला
वास्तव में वह कोई
ह्वेल नहीं, बल्कि ह्वेल
रूपी कोई
विशाल पनडुब्बी है।
अब तुम बिल्कुल ठीक समझे प्रोफेसर। मैं चलता हूं, लेकिन तुम अपने केबिन से बाहर निकलने की कोशिश मत करना, वरना खतरे में पड़ जाओगे।
???

इसी के साथ टेपरिकार्डर से द्वार के खुलकर बन्द होने की एक हल्की-सी आवाज आई और लम्बी खामोशी छा गई। राम के इशारे पर रहीम ने एक स्विच दबा कर टेपरिकार्डर ऑफ कर दिया।

अपराधियों का तो सचमुच जहाज को उड़ाने का इरादा है राम भइया।
हां, और अब मैंने अपना पहले वाला इरादा बदल दिया है।

क्या मतलब?
मतलब यह कि अब हम जहाज नहीं छोड़ेंगे, बल्कि जहाज समेत उस ह्वेल के पेट में पहुंचेंगे, ताकि देख सकें कि आखिर वह ह्वेल है क्या बला?
ओह!
उसके बाद उनके मध्य भी एक लम्बी खामोशी छा गई।

रात के एक बजकर लगभग पन्द्रह मिनट पर जहाज समुद्र के बीचो-बीच था। सहसा कुछ दूरी से तेज रोशनी के दो गोले उदय हुए और जहाज उस रोशनी से जगमगा गया।
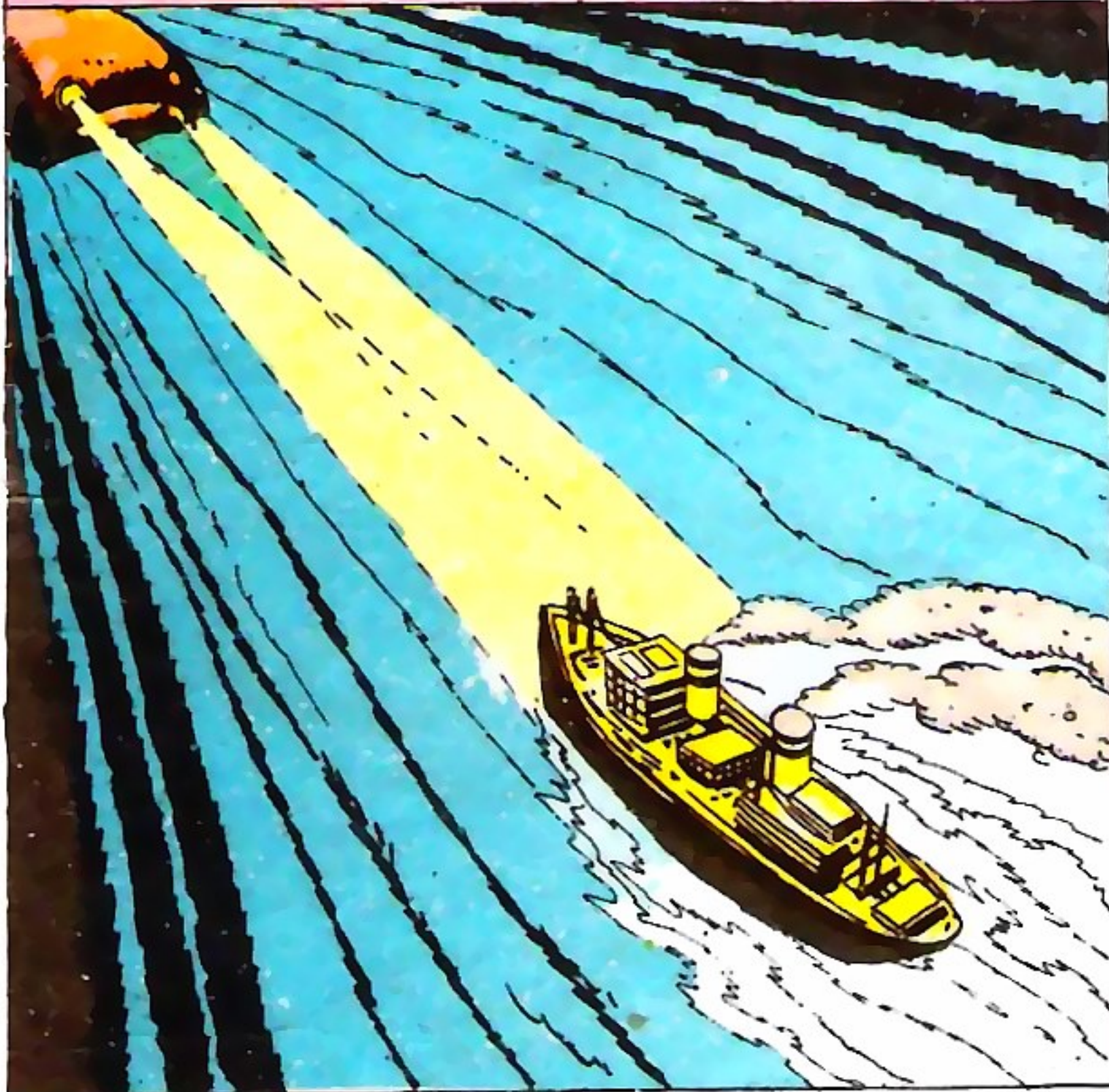
वास्तव में रोशनी के वे दो गोले कुछ और नहीं विशालकाय ह्वेल की दो आंखें थीं, जो अपना मुंह फाड़े जहाज की ओर ही बढ़ रही थी।
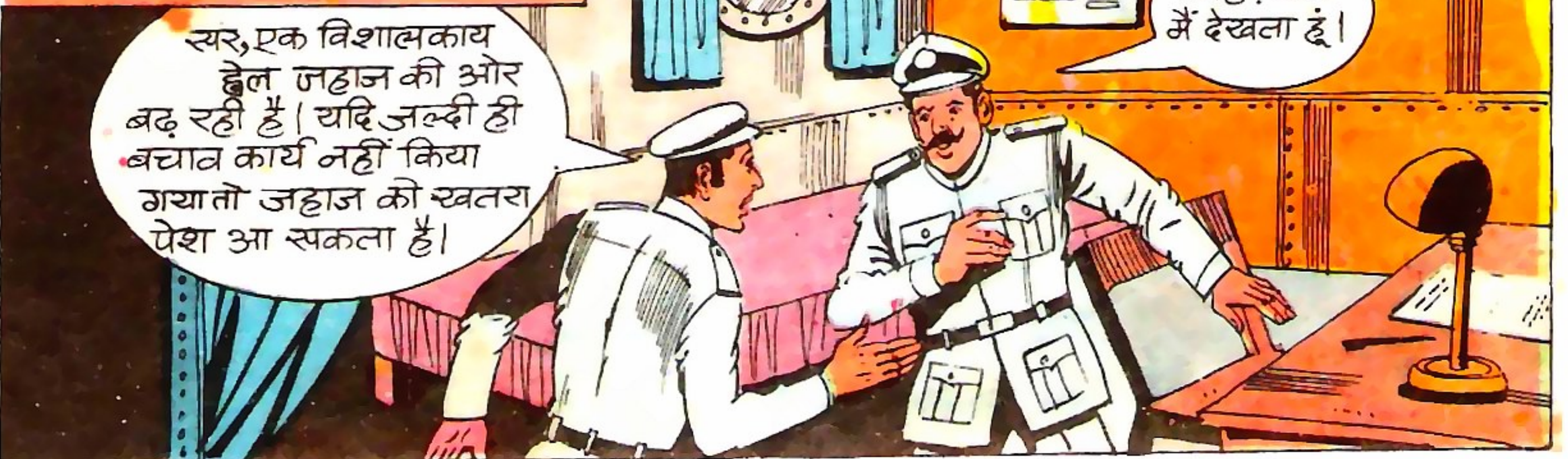
राम-रहीम अपने केबिन में बैठे किसी आने वाले खतरे का इन्तजार कर रहे थे, क्योंकि उस समय एक बजकर पन्द्रह मिनट हो चुके थे। तभी जहाज को एक जबरदस्त झटका लगा और वे हवा में उछल गये।

- वह कौन था, जो जहाजों का अपहरण कर रहा था और वह जहाज़ों का अपहरण क्यों कर रहा था?
- क्या राम-रहीम प्रोफेसर शर्मा को बचा पाने में सफल हो सके?
- क्या डॉ॰ शम्भु वास्तव में प्रोफेसर का मित्र था या–?
- प्रो॰ शर्मा की बेटी लता का क्या हुआ?
- इन सब प्रश्नों के उत्तर जानने के लिये मनोज चित्रकथा के आगामी अंक में पढ़ें:–

विनाश के बादल

मुद्रक : गोयल आफसैट वर्क्स, दिल्ली